E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(4): 119-122
Received: 01-09-2022
Accepted: 05-10-2022

राहुल कश्यप
पीएचडी (शोधार्थी) हिंदी,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
राहुल कश्यप
पीएचडी (शोधार्थी) हिंदी,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

दलित काव्य में सहानुभूति और स्वानुभूति का दृष्टिकोण

राहुल कश्यप

प्रस्तावना

"जिन्हें चिन्हित करना
तुम्हारे लिए वैसा ही है
जैसा 'काला अक्षर भैंस बराबर'
भयभीत शब्द ने मारने से पहले
किया था आर्तनाद
जिसे न तुम सुन सके
न तुम्हारा व्याकरण ही'
(अंधेरे में शब्द, ओमप्रकाश वाल्मीकि)

वो कौन सा आर्तनाद रहा होगा, जिसे केवल कवि ही सुन पाने में सक्षम है, या फिर हम भी सुनते हैं लेकिन उस पर उतना गौर न करते हुए आगे बढ़ जाते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि हममें में से कोई उस आर्तनाद को सुने, ठहरकर थोड़ा दुःखी हो फिर चला जाए। ये जो दो भिन्न प्रकार के चरित्र हमारे सामने दिखाई दे रहे हैं, दरअसल वो दो बड़ी भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जिसे सहानुभूति और स्वानुभूति कहते हैं। उपरोक्त कविता की लाइनों को लिखते हुए कवि स्वानुभूति को महसूस कर रहा है। जबकि दूसरी तरफ दुःखी होने वाला व्यक्ति सहानुभूति को महसूस कर रहा है। ये सहानुभूति और स्वानुभूति का मसला जितना आसान दिखता है, दरअसल वो उतना ही पेचीदा है। इसीलिए पहले इन दोनों शब्दों (सहानुभूति, स्वानुभूति) को संक्षेप में समझने का प्रयास करते हैं। उसके बाद हम देखेंगे कि दलित काव्य में हमें यह कहाँ-कहाँ दिखाई पड़ता है तथा उसका अपना दृष्टिकोण क्या है।

सहानुभूति:- अंग्रेजी में इसे Sympathy कहते हैं। जिसकी उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द 'Pathos' से हुई है। Pathos का अर्थ दुःख होता है। इसका एक दूसरा अर्थ भी है जिसे अनुभूति (Feeling) कहते हैं। जिन अंग्रेजी के शब्दों में 'Path' का प्रयोग होता है वो आमतौर पर 'पीड़ा' (Suffering) या अनुभूति (Feeling) से जुड़ते हैं। जैसे:- टेलीपैथी (telepathy) - दूर से किसी बात को महसूस कर लेना, पैथोलॉजी (Pathlogy) - किसी व्यक्ति के पीड़ा/दर्द के कारण का पता लगाने के लिए परीक्षण करना

इस तरह से हम देखें तो 'सहानुभूति एक ऐसी योग्यता है जिसमें कोई व्यक्ति किसी अन्य मनुष्य, पशु-पक्षी या काल्पनिक चरित्र की पीड़ाओं को महसूस कर सकता है।' लेकिन सहानुभूति एक पुरानी संकल्पना (Cpncept) है।

स्वानुभूति (Empathy):- यह एक नया शब्द है। जिसका प्रयोग दलित साहित्य में बहुत होता है। मुख्य धारा के साहित्य द्वारा दलित साहित्य पर ये आरोप हमेशा लगाए जाते हैं कि आखिर दलित साहित्य में ऐसा क्या है जो अन्य लोग नहीं लिख सकते। इसके जवाब में दलित साहित्य जो तर्क पेश करता है, उन्हीं में से एक मुख्य तर्क 'स्वानुभूति' का आता है।

यह भी ग्रीक भाषा के 'Pathos' से ही निकला हुआ है। इसका आरम्भिक अर्थ 'Pathetic fallecy' (संवेदन आरोप) था। जिसे अंग्रेजी साहित्य की दुनिया में एक अलंकार के तौर पर प्रयोग किया जाता है। हालांकि fallecy का अर्थ दर्शनशास्त्र या लॉजिक की दुनिया में 'तर्कदोष' होता है। बहरहाल Pathetic fallecy को हम एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं।

जैसे:- मान लीजिए कोई रोते हुए घर से निकले और अचानक उसी समय वर्षा भी होने लगे तो ये कहना कि मेरे दुःख में प्रकृति भी शामिल है। वो भी मेरे दुःखों को समझ रही है। इस तरह से अपनी संवेदना को प्रकृति के ऊपर आरोपित कर देना ही 'संवेदन आरोप' (Pathetic fallecy) है।

अतः स्वानुभूति भी मानव, पशु-पक्षी या किसी काल्पनिक चरित्र के मनः स्थिति को समझने की योग्यता है। स्वानुभूति के भी तीन स्तर होते हैं। ये तीनों स्तर डेनियल गोलमैन अपने यहाँ बताते हैं:- (1)- संज्ञानात्मक स्वानुभूति (2)- भावनात्मक/संवेगात्मक स्वानुभूति (3)- करूणात्मक/कारुणिक स्वानुभूति

1. संज्ञानात्मक स्वानुभूति:- ये स्वानुभूति का वो स्तर है जिसमें मनुष्य किसी दूसरे के मनः स्थिति को समझ पाने में सक्षम होता है।
2. भावनात्मक/संवेगात्मक स्वानुभूति:- ये वो स्तर है जिसमें मनः स्थिति को समझने के साथ-साथ व्यक्ति महसूस कर पाने में भी सक्षम होता है।
3. करूणात्मक/कारुणिक स्वानुभूति:- ये वो स्तर है जिसमें मनः स्थिति को समझते व महसूस करते हुए व्यक्ति के अंदर सहायता का भी भाव उत्पन्न हो जाता है।

अब यहाँ हम सहानुभूति और स्वानुभूति की तुलना करें तो ये पाते हैं कि स्वानुभूति, सहानुभूति की तुलना में गहरी अनुभूति है और इसी गहरी अनुभूति की बात दलित साहित्य अपने यहाँ करता है।

दलित काव्य में अगर हम सहानुभूति और स्वानुभूति की बात करें तो स्वानुभूति का पलड़ा ज्यादा भारी दिखाई देता है। अब इन दोनों अनुभूतियों को दलित काव्य में देखने का प्रयास करते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं:-

पथरीली चटान पर
हथौड़े की चोट
चिंगारी को जन्म देती है
जो गाहे-बगाहे आग बन जाती है
आग में तपकर
लोहा नर्म पड़ जाता है
ढल जाता है
मनचाहे आकार में
हथौड़े की चोट में
एक तुम हो,
जिस पर किसी चोट का
असर नहीं होता।

इसको पढ़ते हुए हम महसूस कर सकते हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि एक विशेष वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहे हैं। सामाजिक हकीकत को बिम्ब के तौर पर प्रस्तुत करते हुए अपनी बात को कहने का प्रयास करते हैं। वो केवल सहानुभूति ही नहीं रखते बल्कि सहानुभूति रखते हुए सवाल भी करते हैं। जो उनकी कविता 'तब तुम क्या करोगे' में दिखाई देता है:-

यदि तुम्हें
अपने ही देश में नकार दिया जाए
मानकर बंधुआ
छीन लिए जाय अधिकार सभी
जला दी जाय समूची सभ्यता तुम्हारी
नोच-नोचकर
फेंक दिए जाएं
गौरव में इतिहास के पृष्ठ तुम्हारे
तब तुम क्या करोगे?

स्वानुभूति में दूसरे का दुःख समझते हुए अपना दुःख प्रकट कर देना भी एक योग्यता है। जो ओमप्रकाश वाल्मीकि के यहाँ दिखाई पड़ती है:-

मैंने दुःख झेले
सहे कष्ट पीढ़ी दर पीढ़ी इतने
फिर भी देख नहीं पाए तुम
मेरे उत्पीड़न को
इसीलिए युग समूचा
लगता है पाखण्डी मुझको

कहीं-कहीं हमें सहानुभूति और स्वानुभूति में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है। एक दृष्टि से देखें तो सहानुभूति प्रतीत होती है वहीं दूसरी दृष्टि से देखें तो स्वानुभूति लगती है। जैसे हम ओमप्रकाश वाल्मीकि की

कविता 'सदियों का संताप' पढ़ेंगे तो यह स्थिति और स्पष्ट हो जाएगी:-

दोस्तों,
इस चीख से जगाकर पूछो
कि अभी और कितने दिन
इसी तरह गुमसुम रहकर
सदियों का संताप सहना है.

कुछ इसी तरह की अनुभूति 'ठाकुर का कुआं' कविता में भी दिखाई पड़ती है:-

कुआं ठाकुर का
पानी ठाकुर का
खेत-खलिहान ठाकुर के
गली-मुहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या?
गाँव?
शहर?
देश?

दलित काव्य हमेशा दलितों की आवाज बनकर उभरा है। उनकी मुक्ति की छटपटाहट, दर्द, संवेदना आदि स्वानुभूति के रूप में उनके यहाँ देखी जा सकती है। श्योराज सिंह बेचैन 'अच्छी कविता' में लिखते हैं:-

अच्छी कविता
अच्छा आदमी लिखता है
अच्छा आदमी कथित ऊंची जात में पैदा होता है
ऊँची जात का आदमी
ऊँचा सोचता है
हिमालय की एवरेस्ट चोटी की बर्फ के बारे में
या नासा की
चाँद पर हुई नई खोजों के बारे में
अच्छी कविता कोई समाधान नहीं देती
निचली दुनियादार ज़िंदगी का.....

एक डर की अनुभूति जो स्वानुभूति के रूप में उभरकर सामने आती है। मलखान सिंह लिखते हैं:-

कि बस अभी
बुलावा आएगा
खुलकर खाँसने के
अपराध में प्रधान
मुश्क बांधकर मारेगा
लदवायेगा डकैती में
सीखचों के भीतर
उम्र भर सड़ायेगा।

ये डर किससे है ? दरअसल ये डर तथाकथित सवर्ण मानसिकता से है, जो अपने आगे किसी को देख नहीं सकते।

सहानुभूति और स्वानुभूति का प्रश्न मुख्य रूप से दलित साहित्य में उभरकर आता है। इसी मसले पर काशीनाथ सिंह ने अपने एक अध्यक्षीय भाषण में टिप्पणी की थी कि "घोड़े पर लिखने के लिए घोड़ा होना जरूरी नहीं है।"इसी पर ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं " दिन-भर का थका हारा, जब अस्तबल में भूखा-प्यासा खूँटे से बंधा होगा, तब अपने मालिक के प्रति उसके मन में क्या भाव उठ रहे होंगे ,उसकी अन्तःपीड़ा क्या होगी, इसे आप कैसे समझ पाएंगे? मालिक का कौन सा रूप और चेहरा उसकी कल्पना में होगा, इसे सिर्फ़ घोड़ा ही जानता है। कुछ इसी तरह की अनुभूति सुदामा पांडेय 'धूमिल' की एक कविता में भी देखने को मिलता है:-

लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो
जिसके मुँह में लगाम है.

यहीं वो पक्ष है जो सहानुभूति और स्वानुभूति के अंतर को स्पष्ट कर देता है। मैनेजर पांडेय दलित विमर्श के पक्ष में खड़े होकर कहते हैं कि "केवल राख ही जानती है जलने का अनुभव।" अगर हम उन अनुभवों को दलित काव्य में देंखे तो हमें सहानुभूति और स्वानुभूति के तौर पर साफ दिखाई देता है। उसमें भी स्वानुभूति अपनी उपस्थिति मजबूत तरीके से उपस्थित कराते हुए नज़र आता है। दलित कविताओं में सहानुभूति और स्वानुभूति का दायरा विस्तृत दिखाई पड़ता है। चाहे वो समाज में जातिगत स्तर पर हो या शिक्षा के स्तर पर या कहीं और। सी.बी. भारती अपनी 'चुनौती' कविता में लिखते हैं:-

तुमने चुरा लिए
हमारे विकास के रास्ते
शिक्षा पर लगा दिए प्रतिबंध
आखर पर आज रख दी है तुमने
योग्यता की शर्त।

जो भी परंपराएं तथाकथित सवर्ण समाज द्वारा दलितों पर थोपी गयीं हैं, उनके टूटने की गूंज स्वानुभूति के रूप में दलित कविताओं में दिखाई पड़ता है। दयानंद बटोही लिखते हैं:-

परंपराओं को निभाने में
अब कोई विश्वास नहीं करता
जो नई राह पर चलता है, चलने दो
द्रोण अपनी काया को मत कल्पाओ
मैं एकलव्य अब भी वहीं गुरुभक्त हूँ
जो पहले था
आज भी हूँ।
(द्रोणाचार्य सुने:उनकी परंपराएं सुने)

वहीं दूसरी तरफ सूरजपाल चौहान भी इस पर मुखर होकर बोलते हैं:-

परंपरा का फायदा
रटाने वालों
ऊँचे घरानों के
ढोल पीटने वालों
रास्ते का-
पत्थर भरकर
क्यों मेरे मार्ग को-
अवरुद्ध करते हो?
कलात्मकता की दुहाई देकर
क्यों मेरे कलम की स्याही
पोंछना चाहते हो!
(कलात्मकता के नाम पर)

दलित कविताओं में जहाँ एक तरफ सहानुभूति और स्वानुभूति है तो वहीं दूरी तरफ इसमें अंतर्निहित चेतना का विकास भी है। एन. सिंह लिखते हैं:-

'धीरे-धीरे जाग रहे हैं अब मेरी बस्ती के लोग
रामराज झूठा सपना था, जान गए बस्ती के लोग
बेईमान तो लूट रहे, कुछ ईमानदार बनकर ढलते
एक हैं दोनों, समझ गए हैं, अब मेरी बस्ती के लोग'

जिस प्रकार स्वानुभूति के तीन स्तर होते हैं ठीक उसी तरह सहानुभूति का भी स्तर होना चाहिए। सहानुभूति का चरम स्तर क्या हो सकता है? जब हम जय प्रकाश 'कर्दम' की कविता 'आज का रैदास' पढ़ेंगे तो यह स्पष्ट हो जाएगा:-

विवशता से व्याकुल हो
अपने मन को मसोसता है
अपनी भूख और बेबसी को
कोसता है, और
ईर्ष्या, ग्लानि और क्षोभ से भरकर
व्यवस्था के जूते में
आक्रोश की कील
ठोक देता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी आत्मकथा 'जूठन' में जाति को लेकर लिखते हैं कि आपकी जाति आपके मारने के साथ ही खत्म होती है। ये जो जाति को लेकर उनके मन में पीड़ा थी, दरअसल वो उनकी स्वानुभूति थी। जहाँ हमारे समाज में आज भी जाति को लेकर तमाम तरह की घटनाएं सामने आती रहतीं हैं तो वहीं दूसरी तरफ विदेशों में भी ये चीजें अपना पैर पसार चुकी हैं। भारत में जातिगत भेदभाव की समस्या पुरानी है। कानूनन रोक होने के बाद भी भेदभाव के कई मामले सामने आते रहते हैं। अभी हाल ही में अमेरिका व ब्रिटेन जैसे देशों में भी जातिगत उत्पीड़न का मामला सुनाई पड़ा। अमेरिका में रह रहे सैकड़ों भारतीयों ने इसके ख़िलाफ़ आवाज उठाई है। इन लोगों का आरोप है कि अपनी जाति के कारण उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कथित उत्पीड़न और शोषण करने वाले भारतीय मूल के लोग होते हैं। जो तथाकथित ऊँची जातियों के हैं। जाति को संबोधित करते हुए असंगघोष लिखते हैं:-

ओ जाति!
तू जाती क्या
बेड़ियाँ तोड़
बंधन मुक्त कर
तू जाती क्या...

निष्कर्षत

हम देख सकते हैं कि दलित कविताओं में सहानुभूति व स्वानुभूति दोनों दिखाई पड़ते हैं। इसके पीछे जाति का होना एक विशेष कारण है। क्योंकि सारी घटनाओं के मूल में कहीं न कहीं जाति जरूर होती है और ये जाति अब नासूर की तरह वैश्विक हो चुकी है। क्या इससे उबर पाने में हम सक्षम हैं? कम से कम इन कविताओं के माध्यम से हम एक संभावना की तलाश तो कर ही सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. Hindisamay.com
2. Empathy Vs Sympathy:Concept Talk by Dr.Vikas Divyakirti
3. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र : ओमप्रकाश वाल्मीकि
4. Kavitakosh.Org
5. BBC News Hindi: On Air Episode 12/August/2020, अमेरिका में दलितों के साथ भेदभाव